संवाद पत्र

पूर्वोत्तर सीमा रेल निर्माण संगठन

अंक 42 | वर्ष : एकादश | त्रैमासिक | अप्रैल, 2017

68वें गणतंत्र दिवस समारोह

68वें गणतंत्र दिवस समारोह पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) मुख्यालय, मालीगांव में मनाया गया। श्री एच.के.जग्गी,महाप्रबंधक/निर्माण द्वारा अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। महाप्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि आज से 67 वर्ष पहले आज ही के दिन हम लोगों ने अपने संविधान को अंगीकार करते हुए संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न गणराज्य की स्थापना की थी। तब से लेकर इस राष्ट्र ने लाखों लोगों के अथक परिश्रम एवं बलिदानों के फलस्वरूप लगातार उन्नति की है। अत: यह एक उपयुक्त अवसर है कि देश के विकास एवं उन्नति के लिए हम अपने-आप को पुन: समर्पित करें। संगठन का मुखिया होने के नाते मैं गर्व महसूस करता हूं कि हमारा संगठन बंगाल, बिहार एवं सिक्किम के कुछ हिस्सों के साथ देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र के सुदूरवर्ती इलाकों में रेल नेटवर्क के विकास के उद्देश्य को पूरा करने की ओर अग्रसर हो रहा है। वर्ष 1979 में निर्माण संगठन के अस्तित्व में आने के पश्चात 853 कि. मी. नई लाइनें, 2015.81 कि.मी. आमान परिवर्तन, 431.23 कि.मी. दोहरीकरण तथा ब्रह्मपुत्र नद के ऊपर 2 बड़े मेगा पुलों का निर्माण करना संभव हो पाया है। वित्त वर्ष 2015-16 में हमारे संगठन ने 505.62 कि.मी. बड़ी लाइन चालू करने का एक अभूतपूर्व आंकड़ा हासिल किया है। हमने पूर्वोत्तर क्षेत्र के सभी राज्यों की राजधानियों को वर्ष 2020 तक बीजी रेल संपर्क मुहैया कराने के लिए "विजन 2020" के अंतर्गत विशिष्ट उपलब्धियां हासिल की हैं। इसके अलावा, सिक्किम को छोड़कर पूर्वोत्तर के अन्य सभी राज्यों को बड़ी लाइन से जोड़ लिया गया है।

दिनांक 24.01.2017 को श्री सुरेश प्रभाकर प्रभु, माननीय केंद्रीय रेलमंत्री ने रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली से वीडियो कांफ्रेसिंग क जरिए अगरतला-सबरूम नई लाइन परियोजना के अगरतला-उदयपुर सेक्शन के बीच यात्री गाड़ी सेवा को झंडी दिखाकर शुभारंभ किया।

संरक्षक
श्री एच. के. जग्गी
महाप्रबंधक/निर्माण

मुख्य संपादक
श्री अनिल कुमार
मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि.

संपादक
श्री रवि भूषण
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि.

सहयोग
श्रीमती रंजु झा
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/नि.

श्री मनोज सिन्हा , रेल राज्यमंत्री ने दिनांक 01.04.2017 को इटानगर (नाहरलागुन) में श्री किरेण रिजीजू, राज्यमंत्री (गृह) एवं अन्य प्रतिनिधियों की भव्य उपस्थिति में मिसामारी (भालुकपोंग)-टेंगा-तवांग (378 कि.मी.), नॉर्थ लखीमपुर-बामे (अलोंग)-सिलापथार (248 कि.मी.) और पासीघाट-तेजु-रूपई (227 कि.मी.) के बीच नई बीजी रेलवे लाइन के 3 सामरिक सीमा निर्धारण परियोजना हेतु अंतिम स्थान सर्वेक्षण शुरू करने की प्रक्रिया का उद्घाटन किया।

श्री राजेन गोहाईं, रेल राज्यमंत्री ने दिनांक 31.03.2017 को गुवाहाटी से रिमोट द्वारा हाल ही में बड़ी लाइन में परिवर्तित बराईग्राम-दुल्लबछेरा (29.40 कि.मी.) सेक्शन पर बराईग्राम स्टेशन से दुल्लबछेरा के बीच यात्री गाड़ी सेवा का शुभारंभ किया।

दिनांक 11.03.2017 को लमडिंग-सिलचर आमान परिवर्तन परियोजना के बराईग्राम-दुल्लबछेरा (29.40 कि.मी.) सेक्शन का सीआरएस निरीक्षण पूरा किया गया और दिनांक 15.03.17 को 50 कि.मी. प्रतिघंटा रफ्तार (एक ट्रेन प्रणाली) के लिए प्राधिकार प्राप्त किया गया।

* दिनांक 28.02.2017 को न्यू कुचबिहार-गुमनीहाट दोहरीकरण परियोजना के गुमानीहाट-घोकसाडंगा (7.07 कि.मी) सेक्शन का सीआरएस निरीक्षण पूरा किया गया और दिनांक 01.03.2017 को 110 कि.मी प्रतिघंटा रफ्तार के लिए प्राधिकार प्राप्त किया गया।

* दिनांक 07.02.2017 को जिरिबाम-ईम्फाल नई लाईन परियोजना के जिरिबाम- धोलाखाल (वेंगईचुंगपाओं)(12.50 कि.मी.) सेक्शन का सीआरएस निरीक्षण पूरा किया गया और दिनांक 08.02.2017 को 90 कि.मी प्रतिघंटा रफ्तार के लिए प्राधिकार प्राप्त किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (केंद्रीय कार्यालय-2) गुवाहाटी की बैठक

श्री एच. के. जग्गी, महाप्रबंधक/निर्माण एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (केंद्रीय कार्यालय-2) गुवाहाटी की अध्यक्षता में समिति की चौथी छमाही बैठक 27 फरवरी, 2017 को 15.00 बजे पूर्वोत्तर सीमा रेल के अधिकारी क्लब, नामबाड़ी, मालीगांव में आयोजित की गई। इस बैठक में नराकास-2 के अंतर्गत आने वाले गुवाहाटी शहर के अधिक से अधिक सदस्य कार्यालय शामिल हुए। बैठक की कार्यवाही का संचालन श्रीमती रंजु झा, समिति के सदस्य सचिव एवं वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/नि. ने किया। श्री अनिल कुमार, उपाध्यक्ष, नराकास एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी (नि.) ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए किया। श्री कुमार ने कहा कि अध्यक्ष महोदय के सुझाव एवं मार्गदर्शन से केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाने का अच्छा अवसर प्राप्त होगा। आज की इस बैठक में विशेष रूप से केन्द्र सरकार की राजभाषा नीतियों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की जाएगी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष
श्री एच. के. जग्गी, महाप्रबंधक/निर्माण दीप प्रज्जलित करते हुए

श्री रवि भूषण, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी (नि.) ने सभी सदस्य कार्यालयों से प्राप्त छमाही रिपोर्ट के आधार पर तैयार किए गए "पावर प्वाइंट" प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिस पर विस्तृत रूप से विचार-विमर्श किया गया।

श्री बदरी यादव, अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वयन) ने प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा कि नराकास-2 के अंतर्गत बहुत अच्छा काम हिंदी में हो रहा है। श्री यादव ने राजभाषा अधिनियम के नियम-12 एवं नियम-4 पर विस्तार से चर्चा किया और सभी सदस्य कार्यालय के कार्यालय प्रधान से राजभाषा के शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करने का अनुरोध किया।

श्री रूस्तम राय, उप निदेशक (पूर्वोत्तर), हिंदी शिक्षण योजना, मालीगांव ने गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे हिंदी प्रशिक्षण से संबंधित विस्तृत जानकारी दी और सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया कि सभी सदस्य कार्यालय इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

अध्यक्ष महोदय श्री एच. के. जग्गी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1)में हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है। इसके साथ ही अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह दायित्व है कि वह हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ाए और उसका उचित विकास करे। केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में दिन प्रति दिन के सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। इस बैठक की सफलता आप सभी सदस्य कार्यालयों की सक्रिय सहभागिता से ही संभव है। हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित है, परंतु सभी सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का बहुत अच्छा प्रयोग हो रहा है। वास्तव में, किसी भी सरकारी कार्यालय में यदि हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करना है तो सबसे पहले वहां के उच्च अधिकारियों को पहल करनी होगी। इससे नीचे के कर्मचारियों को भी हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलेगी।

पूर्वोत्तर सीमा रेल, निर्माण संगठन, मालीगांव में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

पूर्वोत्तर सीमा रेल, निर्माण संगठन, मालीगांव की मार्च, 2017 को समाप्त तिमाही के लिए श्री अजीत पंडित, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/नि.-1 की अध्यक्षता में दिनांक 28 अप्रैल, 2017 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

बैठक की कार्यवाही का संचालन श्रीमती रंजु झा, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने किया। बैठक का शुभारंभ श्री अनिल कुमार, मुख्य राजभाषा अधिकारी (नि.) ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए किया। श्री कुमार ने कहा कि माननीय अध्यक्ष महोदय एवं माननीय राजभाषा प्रेक्षक सदस्य के सुझाव एवं मार्गदर्शन से हमारे संगठन में राजभाषा के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाने का अच्छा अवसर प्राप्त होगा।

श्री रवि भूषण, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने विभिन्न विभागों से प्राप्त तिमाही आंकड़ों के आधार पर तैयार किए गए "पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन" प्रस्तुत किया।

अध्यक्ष महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि जिन विभागों ने राजभाषा अधिनियम धारा 3 (3), मूल पत्राचार, हिंदी डिक्टेशन एवं हिंदी टिप्पण एवं नोटिंग में अच्छी उपलब्धि हासिल की है, उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं और आगे भी वे इसे बरकरार रखें इस बात की कामना करता हूं। 1 अप्रैल, 2017 से नये वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए सभी विभागों को अपने स्तर पर उचित कार्रवाई करनी होगी। वार्षिक कार्यक्रम के सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हर स्तर पर पूरे प्रयास किए जाएं। वित्तीय वर्ष में हमने जो लक्ष्य प्राप्त कर लिए हैं, उनमें कमी न आने दी जाए और अगले वर्ष में भी हमारे हिंदी कामकाज में उल्लेखनीय प्रगति हो सके।

इस बैठक में राजभाषा प्रेक्षक सदस्य डॉ. देवेन चन्द्र दास "सुदामा" जी भी उपस्थित थे। श्री सुदामा ने कहा कि मैं रेलवे के साथ-साथ वित्त मंत्रालय विभाग का भी राजभाषा सदस्य हूं। वित्त मंत्रालय की तरह ही रेलवे में भी सभी प्रकार के विज्ञापन द्विभाषी रूप में ही प्रकाशित किए जाते हैं जो कि काफी सराहनीय है। श्री सुदामा ने सभी अधिकारियों से अनुरोध किया कि अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को अधिक से अधिक काम हिंदी में करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करें।

अगरतला-सबरूम नई बीजी लाइन परियोजना के अगरतला-उदयपुर सेक्शन का संक्षिप्त विवरण

वर्ष 2007-08 के रेल बजट में अगरतला से उदयपुर तक नई बीजी लाइन के कार्य को शामिल किया गया था और वर्ष 2007-08 के पिंक बुक के मद संख्या-4 में प्रकाशित किया गया। अगरतला-उदयपुर सेक्शन के लिए आंशिक विस्तृत प्राक्कलन रेलवे बोर्ड के पत्र सं. 98/डब्ल्यूआई/एनएल/एनएफ/6 दिनांक 29.07.2009 के तहत 364.08 करोड रूपए की लागत से रेलवे बोर्ड द्वारा स्वीकृत की गई थी। उदयपुर-सबरूम सेक्शन के लिए आंशिक विस्तृत प्राक्कलन रेलवे बोर्ड के पत्र सं. 98/डब्ल्यूआई/एनएल/एनएफ/6 दिनांक 23.11.2010 के तहत 777.67 करोड़ रूपए (कुल लागत 1141.75 करोड़ रूपए) की लागत से स्वीकृत की गई।

यह रेलवे लाइन राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 के समानांतर गुजरती है और 10.72 कि.मी. को पार करती है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 इस क्षेत्र की जीवन रेखा है और इसका निर्माण 1958 में किया गया था। यह सबरूम को अगरतला से जोड़ती है। त्रिपुरा राज्य उत्तर पूर्व क्षेत्र के दक्षिणी छोर पर अवस्थित है और बंगलादेश से तीनों ओर घिरा हुआ है।

यह रेलवे लाइन अगरतला से सबरूम तक त्रिपुरा राज्य के कुल 8 जिलों में से 4 जिलों से होकर गुजरती है जैसे कि पश्चिम त्रिपुरा (अगरतला), सिपाहीजला (विश्रामगंज), गोमती (उदयपुर) और दक्षिण त्रिपुरा (बेलोनिया)।

अगरतला-उदयपुर नई बीजी रेलवे लाइन 44.762 कि.मी. लम्बी है। इस नई लाइन परियोजना में 3 क्रॉसिंग स्टेशन (विशालगढ़, विश्रामगंज और उदयपुर) एवं एक हॉल्ट स्टेशन (सेकेरकोट) है। इस परियोजना में 58 अदद सड़क क्रॉसिंग (आरओबी-27, आरयूबी-16 एवं एलएचएस-15) हैं। इस सेक्शन में कुल 7 अदद बड़े पुल एवं 80 अदद छोटे पुल हैं। इस सेक्शन में कोई लेबल क्रॉसिंग और कोई भी सुरंग नहीं है। इस सेक्शन में इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (ईआई) के साथ मल्टीपल एस्पेक्ट कलर लाइट (एमएसीएल) सिगनल मौजूद है।

इस परियोजना का दिनांक 25.09.2016 को सीआरएस, एनएफ सर्किल द्वारा निरीक्षण किया गया एवं दिनांक 28.09.2016 को सेक्शन में यात्री एवं मालगाड़ी चलाने के लिए अधिकतम 100 कि.मी. प्रति घंटा रफ्तार के लिए प्राधिकार प्राप्त किया गया।

चिंता से नहीं ज्ञान से है जीवन

पूरा ब्रह्माण्ड एक ही जीव पिण्ड है और यह जीवन्त है। प्रत्येक मन उसी का एक भाग है। यह सर्वोच्च ज्ञान है और अन्य सभी ज्ञान इसी सार्वभौमिक सत्य का उद्घाटन करते हैं। समझें ? हां, तो अब बताओ तुम कहां हो ? सभी जगह। सर्व व्यापक। आकाश की भांति यहां भी वहां भी। तुम सर्वत्र हो, सब में व्याप्त हो। इस भाव के जन्म के बाद ही सेवा भाव उदय होता है। इस भाव से उपजी सेवा ही सच्ची सेवा है, तब ही किसी के दुख से तुम भी दुखी हो जाते हो, किसी की पीड़ा की चुभन तुम्हें भी सताती है, क्योंकि कोई दूसरा है ही नहीं। ऐसा अनुभव है न सबको ?

संसार में अत्यधिक दुख और क्लेश है और इसकी तपिश हम सबको पहुंचती है। इस दुख का निवारण केवल ज्ञान से ही संभव है। अत: इस ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हमें बहुत सेवाभाव से काम करना है। है न ? अपने मित्रों से मिलो। हमें जीवन का स्तर, जीवन की गुणवत्ता बढ़ानी है। जरा बच्चों को देखो तो छोटे बच्चे, नर्सरी, के.जी. के बच्चे। खुशी, आनंद, उत्सव जैसे उनमें से छलक रहा होता है। वही बच्चे बड़े होकर जब हाई स्कूल में पहुंचते हैं तो मुरझाने से लगते हैं। प्रसन्नता, आनंद, उत्सव का माहौल ही नहीं, बच्चों की ऊर्जा हिंसा, निराशा, विरोध या निष्क्रियता की ओर बहने लगती है। ऐसा करो अपना एक समूह बनाओ, महीने में एक बार या पन्द्रह दिनों में एक बार आपस में सत्संग करो, उसमें जिन्होंने साधना सीखी हुई है उन्हें और जिन्होंने नहीं सीखी उन्हें भी आमंत्रित करो। अब थोड़ा गाओ, ध्यान करो, ज्ञान चर्चा करो, प्रीतिभोज करो। कभी-कभी संघ जीवन में जीयो। एक नया अनुभव लो।

बातें करने में सभी को रस होता ही है। बातें क्या होती है? इधर-उधर की कपड़ों की, सिनेमा की, राजनीति या मौसम की। अपना अनमोल समय हम तुच्छ बातों में गवां देते हैं। इसी को ज्ञान चर्चा में लगाएं तो कैसा रहे? जीवन में आपको क्या मिला, आपने जीवन को कैसे स्वीकार किया, जो ज्ञान आपको मिला उसे आपने कितना जीया या जीवन में उतारा, क्या आप वर्तमान में जीते हैं? समय सार्थक उपयोग यही है कि मन को क्षुद्र से हटाकर ज्ञान, विवेक और शाश्वत के बोध से जोड़ें।

यह शरीर मरणधर्मा है, इसकी शक्ति दिन-ब-दिन घटती जा रही है। यह नित नश्वरता की ओर जा रहा है। कुछ भी कर लो, इसे बदला नहीं जा सकता। और आत्मा? आत्मा तो है अनित्य, अनश्वर, अमर। उमर बढ़ने के साथ-साथ तुम्हारे मन में भी परिपक्वता आए और इसकी रूचि आत्मबोध की ओर बढ़ती जाए तो बहुत शुभ। शरीर तो दिनों दिन धरती में समा जाने का आयोजन करता है, यह प्रकृति का नियम है। परंतु हम इसी नश्वर शरीर के साथ इतना जुड़े रहते हैं कि दिन-रात इसी की चिंता बनी रहती है, मन इसी में उलझा रहता है और सत्य (आत्मबोध) के केन्द्र बिन्दु से हट जाता है। ऐसा ही है न? नश्वरता की सानिध्य से दुख ही तो मिलेंगे ? हां, तो संसार में इतना दुख है। इस दुख के निवारण हेतु हमें इकट्ठे होकर हमें कोई ठोस कदम उठाना है। वह ठोस कदम है सेवा। सेवा तो अनिवार्य है। यदि हम केवल अपनी ही चिंता करें, मैं के घेरे में घिरे मेरा क्या होगा यही सोचते रहें तो समझो हमने अपने को नरक में डाल लिया। समझो, यह एक विधि है निराशा में उतरने की। जिस दिन आप बहुत खुश हो और साथ ही निराश का अनुभव लेने की इच्छा हो तो मेरा क्या होगा ? सोचना शुरू कर दो। मैं आश्वासन देता हूं कि घंटे भर में खुशी गायब और आप गहरी निराशा और चिन्ताओं की गर्त में होंगे। इसी सोच की वजह से आज हर ओर इतनी निराशा और पीड़ा है। हमें निश्चय ही जीवन के प्रति इस नकारात्मकता केउन्मूलन की ओर कदम उठाने होंगे।

- श्री श्री रविशंकर